इकाई 4 समाज

इकाई की रूपरेखा

4.0 प्रस्तावना

4.1 सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच संबंध

4.2 समाज

4.3 समूह

4.4 संघ

4.5 समुदाय

4.6 जनजाति और जाति

4.7 पद और भूमिका

4.8 सामाजिक वर्गीकरण

4.9 समाज और संस्कृति के बीच संबंध

4.10 सारांश

4.11 संदर्भ

4.12 आपकी प्रगति को जांचने हेतु उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

यह इकाई छात्रों को निम्न बातों की व्याख्या करने में मदद करेगी:

- सामाजिक मानव विज्ञान में मूलभूत अवधारणाएं;
- समाज की अवधारणाओं के अर्थ और महत्व;
- समूह, संघ (संगठन), समुदाय जैसे समाज के पहलू; तथा
- समाज और संस्कृति के बीच संबंध।

4.0 प्रस्तावना

अगर ऐसी कोई अवधारणा है जिसको मानव विज्ञान (एवं समाजशास्त्र में भी) के केंद्र के रूप में जाना जाता है, तो वह है'समाज' की अवधारणा। यदि इस विचार को मान लिया जाए तो हम पाते हैं कि उप–मनुष्यों के स्तर पर भी समाज पाया जाता है, जैसे कि आदिमानव, बंदरों

योगदानकर्त्ता : प्रो. विनय कुमार श्रीवास्तव पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,
डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू

और चिम्पांजी। मानवविज्ञानी इस बात का उल्लेख करते हैं कि मानव समुदायों के बीच संस्कृति की मौजूदगी अन्य जानवरों से मनुष्यों को अलग करती है और इस तरह मानव को 'संस्कृतिशील प्राणी' के रूप में वर्णित किया गया। अतः मनुष्य को जानने–समझने के लिए हमें समाज और संस्कृति की गतिशीलता का अवलोकन करना होगा। इस इकाई में हम उन अवधारणाओं के बारे में चर्चा करेंगे जोकि समाज संबंधी ज्ञान और जानकारी के लिए मुख्य हैं। समूह, संघ, समुदाय, जनजाति, जाति, स्थिति व भूमिका और सामाजिक वर्गीकरण जैसे प्रमुख विशेषताएं या गुण हैं जो समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। हम समाज और संस्कृति के बीच के संबंधों की भी चर्चा करेंगे।

4.1 सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के बीच संबंध

मानव विज्ञान (और समाजशास्त्र में भी) में दो प्रमुख अवधारणाएं हैं जिसे समाज और संस्कृति कहते हैं। मानव समाज के मामले में ये दोनों अवधारणाएं एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं, जबकि गैर–मानव समाज के मामले में स्थिति बिल्कुल अलग है। पशु समाज को संस्कृतिविहीन समाज के रूप में जाना जाता है। हालांकि, गैर–मानव आदिमानवों की कुछ गतिविधियों में संस्कृति की छाप मिलती है। उदाहरण के तौर पर बडे लंगूरों, चिंपाजी के बारे में ये कहा जाता है कि उनमें अल्पविकसित संस्कृति और भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है, जिसे 'मेटा–भाषा' कहते हैं। यह देखा गया है कि चिम्पांजी अपने वातावरण से भोजन प्राप्त करने लिए लकड़ी के कुछ औजारों का इस्तेमाल करते हैं। तंजानिया में चिम्पांजी के अध्ययन के दौरान जेन गुडॉल ने ऐसा ही पाया।

इसके अतिरिक्त मानव से इतर जीव–जंतुओं और पशु–पक्षियों के कुछ कार्य– जैसे कि पक्षियों द्वारा बनाए गए घोंसले–सदियों बाद उनकी भावी पीढ़ी द्वारा भी ऐसे ही बनाए जाते हैं। भविष्य में किसी चिड़िया द्वारा बनाए गए घोंसले कालांतर में उसकी माँ द्वारा बनाए गए घोंसले के अनुरूप ही अथवा उस प्रजाति के दूसरे सदस्यों द्वारा बनाए गए घोंसलों के समान ही होंगे। गैर मानव जीव–जंतुओं का परिणाम घोंसला के आकार और संरचना की समानता की प्रव त्ति को माना जा सकता है। उनकी आनुवंशिक सामग्री में परिवर्तन होने पर उनके द्वारा निर्मित उत्पादों में बदलाव हो जाएगा। परंतु मनुष्यों में ऐसा नहीं होता है, क्योंकि उनके उत्पादों में बदलाव जारी रहता है और उनके उत्पाद उनके जैव आनुवंशिक पदार्थों से स्वतंत्र किस्म के होते हैं।

मानवविज्ञानियों की माने तो संस्कृति केवल मनुष्यों में ही पाई जाती है। अतीत या वर्तमान का कोई मानव समाज, चाहे वो सरल समाज हो या जटिल समाज का कभी भी संस्कृतिविहीन नहीं रहा है। अतः पशु समाज की कल्पना संस्कृतिविहीन समाज से की जा सकती है जबकि मानव समाज की नहीं। इसी कारण से ब्रोंस्लालो मालिनोव्स्की ने कहा है कि 'संस्कृति का संबंध विशिष्ट रूप से मानव से ही है'।

समाज और संस्कृति की अवधारणाएं मानव जीवन के निर्बाध प्रवाह की संकल्पनाएं हैं। समाज की अवधारणा जनसंख्या और लोगों के समूह के बीच संबंधों के सेट पर बल देती है। तुलना करने पर हम पाते हैं कि संस्कृति रीति–रिवाजों और प्रथाओं का नाम है, जिसमें मनुष्यों ने जीवित रहने के क्रम में समय के साथ सुधार किया है। अतः जब हम समाज की बात करते हैं तो हम लोगों के बीच अंर्तसंबंधों की बात करते हैं, और जब हम संस्कृति की बात करते हैं, तो उसमें लोगों के व्यवहार, बातचीत करने का तरीका, विभिन्न कामों को करने के तरीके और उनकी उपलब्धियाँ शामिल होती हैं। उदाहरण के लिए, किसी माँ और उसके बच्चे के

बीच का रिश्ता एक सामाजिक संबंध होता है, परंतु बच्चा और माँ एक दूसरे से कैसे व्यवहार करें, यह संस्कृति का एक भाग है। माँ और बच्चे का संबंध सार्वभौमिक है, परंतु अलग–अलग संस्कृतियों की माँओं और बच्चों के व्यवहार और कार्यों में काफी भिन्नता होती है। उदाहरण के लिए कोई अमेरिकी माँ, फिलीपींस की माँ की तुलना में अलग होगी और उन दोनों में यह भिन्नता संस्कृति का परिणाम है, जोकि एक पीढ़ी से अगले पीढ़ी तक जाती है। मानव विज्ञान के इतिहास में किसी एक अवधारणा को किसी दूसरी अवधारणा की तुलना में प्राथमिकता देने पर सदैव विवाद रहा है। उदाहरणस्वरूप, अमेरिकी मानवविज्ञानी यह मानते थे कि संस्कृति मनुष्यों की मुख्य विशेषता है, इसलिए सामाजिक संबंधों के अध्ययन में संस्कृति को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। रॉबर्ट लोवी ने यह कहा है कि मानव विज्ञान हेतु संस्कृति की अवधारणा ठीक उसी प्रकार है जैसे कि, गणित विषय हेतु शून्य की अवधारणा है। अन्य शब्दों में यह कहा जा सकता है कि उन्होंने मानव विज्ञान शाखा में संस्कृति की अवधारणा को मुख्य माना है। अतः अमेरिकी मानव विज्ञान ने 'सांस्कृतिक मानव विज्ञान' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया जिसके अंर्तगत समकालीन समाजों के जीवनयापन के तरीके, रीति–रिवाजों और प्रथाओं आदि का अध्ययन किया जाता है और विशेष रूप से जनजातीय लोगों और स्थानीय लोगों के जीवन का।

ब्रिटिश मानव विज्ञान का परिप्रेक्ष्य इससे अलग था। ब्रिटिश मानव विज्ञान के प्रमुख विद्वान ए. आर. रैडक्लिफ–ब्राउन, जो फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम से अधिक प्रभावित थे, उन्होंने सामाजिक संरचना (अथवा दुर्खीम(डर्खाईम) ने जिसे 'सामाजिक रूपरेखा' कहा है) के अध्ययन को प्राथमिकता दी। इसका परिणाम यह हुआ कि ब्रिटिश मानव विज्ञान अपने आप में 'सामाजिक मानवविज्ञान' बन गया, जिसे समाज के स्वरूप और संबंधों के अध्ययन में रूप में परिभाषित किया गया जोकि सरल समाजों में पाया जाता है। 1905 में लिवरपूल में सामाजिक मानव विज्ञान के चेयर की स्थापना की गई और सर जेम्स फ्रेजर इस पद पर आसीन होने वाले पहले व्यक्ति थे जो कि *द गोल्डन बॉ* के प्रसिद्ध लेखक हैं।

मानव विज्ञान की इन दोनों शाखाओं के बीच विवाद के शीघ्र अच्छे परिणाम उस समय आए जब यह तर्क दिया गया कि समाज और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और ये दोनों एक दूसरे से संबंधित हैं। क्लिफोर्ड गीर्टज ने यह कहा कि ये मानवविज्ञानियों की मानव जीवन से संबंधित कल्पनाएँ हैं। अतः किसी एक अवधारणा को प्राथमिकता देने न देने के विवाद में पड़ने के स्थान पर इन दोनों के बीच अंर्तसंबंध को प्राथमिकता देना बेहतर होगा क्योंकि मनुष्य संस्कृतिविहीन नहीं रह सकता है तथा संस्कृति सामाजिक संबंधों से निर्मित होती है। समाज और संस्कृति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इस अवधारणा के विरुद्ध कई विद्वान सामाजिक मानव विज्ञान या सांस्कृतिक मानव विज्ञान के संदर्भ में नहीं सोचते हैं और इसके विपरीत वे इसे 'सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान'(अथवा 'सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान', 'सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान') का नाम देते हैं जो यह दर्शाता है कि अध्ययन में समाज और संस्कृति दोनों को समान महत्व दिया जाता है।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. संस्कृति को 'विशिष्ट मानव' का नाम किसने दिया ?

   .....

   .....

   .....

2. किस मानवविज्ञानी ने यह टिप्पणी की है कि "जिस प्रकार गणित विषय हेतु शून्य का महत्त्व है उसी प्रकार मानव विज्ञान के लिए संस्कृति का महत्त्व है"?

.....

.....

.....

3. फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम के कार्यों से कौन से ब्रिटिश मानवविज्ञानी प्रभावित थे?

.....

.....

.....

4. 'सामाजिक रूपरेखा' का क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

5. सामाजिक मानव विज्ञान चेयर की स्थापना कब और कहाँ की गई?

.....

.....

.....

6. सामाजिक मानव विज्ञान चेयर के पद पर सबसे पहले कौन आसीन हुए और उनके प्रसिद्ध किताब का नाम क्या है?

.....

.....

.....

4.2 समाज

'समाज' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द *सोसियस* से हुई है, जिसका अर्थ है 'साझा करना'। कहने का तात्पर्य यह है कि इस विचारधारा के अंतर्गत जो लोग समाज का गठन करते हैं उनके बीच आदान–प्रदान करने की प्रवृत्ति होती है और उन लोगों के बीच एक अंर्तसंबंध होता है। समाज की अवधारणा अनुभवजन्य और सारगर्भित दोनों होती है। अनुभवजन्य स्तर पर देखा जाए तो समाज की अवधारणा का तात्पर्य यह है कि समाज में लोगों के समूह शामिल होते हैं। कोई व्यक्ति 'एकल' होता है और वह सामाजिक मूल्यों, व्यवहार करने के मानदंडों और जिस समाज का वह अंग होता है उसमें कार्य करने की तकनीक को आत्मसात् करने में सक्षम होता है तथा उस समाज के दूसरे लोगों के साथ अपने संबंध को स्थापित करने में

भी वह सक्षम होता है। जब कोई मनुष्य सामाजिक वस्तु बन जाता है तब उसे 'व्यक्ति' कहा जा सकता है। सरल शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि समाजीकृत मनुष्य उस मनुष्य को कहा जाता है जो समाज में रहने के तरीकों (या साझा करने की प्रवृत्ति) को सीख लेता है। प्रत्येक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ संबंधित है। ये अंर्तसंबंध समाज की अवधारणा के मूलभूत सिद्धांत हैं। अरस्तु ने कहा है कि 'मनुष्य एक राजनीतिक (अर्थात् सामाजिक) प्राणी है, जिसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य समूह में एक साथ रहता है। अरस्तु ने यह भी कहा है कि अकेला रहने वाला या तो जानवर हो सकता है या ईश्वर। अतः कोई भी मनुष्य कभी भी अकेला या अलग–थलग नहीं रहता। किसी मनुष्य को कठोरतम सजा के रूप में अकेले जीवन बिताने की सजा दी जा सकती है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि समाज वह ढांचा है जिसे मानवविज्ञानी और समाजशास्त्रियों ने मानव व्यवहार और उसके विश्लेषण हेतु बनाया है।

समाज को व्यक्तियों के समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। हालांकि, प्रत्येक समूह समाज का निर्माण नहीं करते। उदाहरण के लिए, भीड़ (झुंड) को भी व्यक्तियों का समूह कहा जा सकता है, लेकिन जैसे ही इस प्रकार के समूह को प्रेरित करने वाले घटक गौण हो जाते हैं, इस प्रकार का समूह भी समाप्त हो जाता है। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो सदियों से मनुष्य की सामूहिकता और समूह के सभी सदस्यों के बीच एकता की भावना से ही समाज का सृजन होता है। समाज के सदस्यों में अपने क्षेत्र से लगाव होता है जिसे वे सामूहिक रूप से संरक्षित करने की कोशिश करते हैं। समाज के सदस्यों के बीच श्रम का विभाजन भी होता है और समाज के प्रत्येक समूह का कार्य अलग–अलग निर्धारित होता है। प्रत्येक समाज अपने आप में छोटी–छोटी इकाईयों में विभाजित होता है और इकाईयों को उस समाज का समूह कहा जाता है।

अपनी प्रगति की जांच करें:

7. समाज शब्द की उत्पत्ति किस लैटिन शब्द से हुई है?

   .....

   .....

   .....

8. 'मनुष्य को एक राजनीतिक प्राणी' किसने कहा है?

   .....

   .....

   .....

9. समाज का क्या तात्पर्य है? इसकी व्याख्या अपने शब्दों में करें।

   .....

   .....

   .....

   .....

4.3 समूह

जीव के साथ तुलना करके समाज की अवधारणा को आगे विकसित किया गया है। इसे मूलभूत समरूपता के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ यह है कि समाज को समझने हेतु जीव के मॉडल का उपयोग किया जाता है। चूंकि कोई जीव अंगों में विभाजित होता है और अंग ऊतकों में विभाजित होते हैं, और ऊतक कोशिकाओं में। ठीक इसी प्रकार समाज समुदायों में विभाजित होता है, समुदाय समूहों में विभाजित होते हैं और समूह व्यक्तियों में।

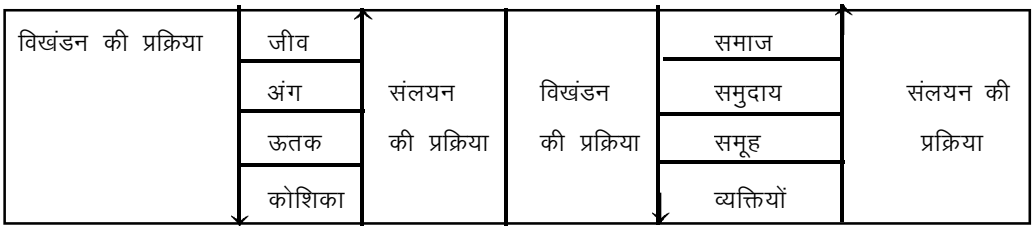

व्यक्ति मूलभूत इकाई होता है, परन्तु कोई भी व्यक्ति कभी भी अलगाव में जीवित रहने की उम्मीद नहीं कर सकता है। व्यक्ति संबंधों में प्रवेश करता है और व्यक्तियों की इस सामूहिकता को समूह कहा जाता है। किसी समूह को उन व्यक्तियों के बीच संबंधों के सेट के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कई कार्यों को सामूहिक रूप से पूरा करते हैं। जॉर्ज होम्स द्वारा समूह को 'सामाजिक ईंट' कहा गया है और समूहों के मिलने से समुदाय बनता है।

सीएस कूले द्वारा समूह की अवधारणा में एक अहम योगदान किया गया। उन्होंने प्राथमिक समूह की अवधारणा दी, जो समाजीकरण की प्रक्रिया में एक अपूरणीय भूमिका निभाता है। एक प्राथमिक समूह एक छोटा समूह है, जिसमें पच्चीस से अधिक व्यक्ति नहीं होते हैं, जिनके बीच लगातार बातचीत होती है और उनमें एकता की भावना होती है। 'पच्चीस व्यक्ति' के विचार को 'व्यक्तियों के छोटे समूह' के अर्थ में समझा जा सकता है, जिनमें नियमित तौर पर बातचीत संभव है, और इन व्यक्तियों का जीवन भी एक जैसा हो सकता है। वे संयुक्त परिवारों की भांति एक ही घर में रह सकते हैं, या एक ही पड़ोस का हिस्सा हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, 'पच्चीस व्यक्तियों' के विचार को वस्तुतः नहीं लिया जाना चाहिए।

परिवार, सहकर्मी समूह और पड़ोस प्राथमिक समूह के उदाहरण हैं। समाजशास्त्र ने किसी प्राथमिक समूह की तुलना में एक ऐसे समूह के विषय में बात की है जिसे माध्यमिक समूह के रूप में जाना जाता है और जिसमें अधिक व्यक्ति होते हैं तथा उनके बीच प्रत्यक्ष बातचीत नहीं होती है, जो कि अंतिम प्रकार का माध्यम होता है। इसका तात्पर्य यह है कि ऐसे समूहों में दूसरे का शोषण सम्मिलित है और लक्ष्यों को पूरा करने के उपरांत समूह नष्ट हो जाता है। यह निरंतरता की तरह नहीं है जैसा कि प्राथमिक समूहों के लिए जिम्मेदार माना जाता है जो जनजातीय और ग्रामीण जैसे पारंपरिक समाजों में प्रचुर मात्रा में होता है जबकि माध्यमिक संबंध शहरी समाज में बड़ी संख्या में हैं अतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण से शहरी समाज में बदलाव का तात्पर्य माध्यमिक समूहों की संख्या में भी बढ़ोतरी है। यद्यपि इससे यह अनुमान नहीं लगाया जाना चाहिए कि आधुनिक समाजों में कोई प्राथमिक समूह नहीं होता है। परिवार जो कि प्राथमिक समूह का एक उदाहरण है वह सार्वभौमिक रूप से पाया जाता है। इसी प्रकार मित्रता भी सार्वभौमिक रूप से पाई जाती है।

प्राथमिक और माध्यमिक समूहों के विभाजन के अतिरिक्त इसके कुछ अन्य वर्गीकरण भी प्रस्तावित किए गए हैं। उदाहरण के लिए डब्ल्यू.जी. सुमनर ने समूहों को 'आन्तरिक समूह'

('अंदरूनी समूहों') और 'बाह्य समूह' (बाह्य लोगों के समूह) में विभाजित किया है। पहला समूह उन लोगों का है जो समूह के सदस्य हैं और उनमें एकता (हमारा) की भावना है। वे सभी लोग जो इस समूह के सदस्य नहीं हैं उन्हें बाह्य समूह कहा जाता है। दूसरी अवधारणा अत्यंत प्रसिद्ध संदर्भ समूह की है – यह लोगों का वह समूह है जो अनुकरणीय है। यह अवधारणा ऊपर की ओर (और नीचे की ओर भी) सामाजिक गतिशीलता के सन्दर्भ को समझने में सहायक है।

अपनी प्रगति की जांच करें

10. जैविक सादृश्य (आर्गेनिक एलालॉग) क्या है?

.....

.....

.....

11. समूह क्या है? समूह को किसने 'सामाजिक ईंट' के रूप में परिभाषित किया है ?

.....

.....

.....

12. प्राथमिक समूह की अवधारणा किसके द्वारा दी गई?

.....

.....

.....

13. प्राथमिक समूहों के उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

14. माध्यमिक समूह को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

4.4 संगठन

समूह की अवधारणा से निकटता से संबंधित संगठन की अवधारणा है। संगठन विशेष प्रयोजनों को प्राप्त करने के लिए व्यक्तियों द्वारा बनाए जाते हैंय यही वजह है कि संगठनों को 'विशेष उद्देश्य समूह' के नाम से भी जाना जाता है। यहां क्षेत्र और रिश्तेदारी महत्वपूर्ण नहीं हैं। ऐसे

समूह स्वैच्छिक और गैर–स्वैच्छिक दोनों प्रकार के होते हैं. स्वैच्छिक संगठन इसलिए कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति इसमें शामिल होने के लिए स्वतंत्र है, जबकि अनैच्छिक संगठन के मामले में, ऐसी स्वतंत्रता की अनुमति नहीं होती है। उदाहरण के लिए, सिंगापुर में मामले में प्रत्येक पुरुष को सेना का सदस्य होना होता है। व्यक्ति अपने विवेक का प्रयोग यहां पर नहीं कर सकता है। एक स्वैच्छिक संगठन में शामिल होने या न करने की स्वतंत्रता व्यक्ति को दी जाती है।

उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति जाति समूह का सदस्य तो हो सकता है परन्तु यह जरुरी नहीं है कि वह जाति संगठन का भी सदस्य हो। किसी जाति समूह की सदस्यता वर्णनात्मक है, जो की माता–पिता के किसी जाति से संबंधित होने पर बच्चा भी जन्म के आधार पर उस जाति का सदस्य बन जाता है। तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो किसी भी संगठन के साथ जाति का संबंध सदस्यों के हितों को आगे बढ़ाने के एकमात्र उद्देश्य से स्थापित किया जाता है और वह स्वैच्छिक होता है। एक संभावना यह भी हो सकती है कि जाति का संबंध किसी से न हो। शिक्षक संगठन, किसान संगठन, राजनीतिक दल, शतरंज खिलाडियों का संगठन, छात्र संगठन, या केशहीन व्यक्तियों का क्लब संगठन के कुछ उदाहरण हैं। कुछ विद्वानों के लिए, संगठन समूह का एक प्रकार हो सकता है जिसे 'संघीय समूह' कहा जा सकता है, जबकि दूसरों के लिए संगठन समूह से अलग होता है क्योंकि उसके विशिष्ट उद्देश्य होते हैं।

परंपरागत समाजों सहित सभी प्रकार के समाजों में संगठन पाए जाते हैं। कई मानवविज्ञानी इन्हें 'सोडेलिटी समूह' या 'सोडेलिटीज' कहते हैं। उदाहरण के लिए जिस प्रकार आयु सेट एक संगठन है उसी प्रकार इसलिए जादूगरों का समाज भी होता है (जिसे 'गुप्त समाज' भी कहते हैं)। सरल समाजों में संगठनों की संख्या सीमित होती है। जटिल समाजों में उनकी संख्या ज्यादा होती है क्योंकि जटिल समाजों में किसी भी कार्य को पूरा करने हेतु किसी व्यक्ति द्वारा किसी संस्था को स्थापित करने की संभावना होती है।

अपनी प्रगति की जांच करें

15. संगठन को परिभाषित करें।

    .....

    .....

    .....

16. स्वैच्छिक और गैर–स्वैच्छिक संगठनों के बीच के अंतर को उद्घाटित करें।

    .....

    .....

    .....

17. संघों को 'सोडेलिटी समूह' भी कहा जाता है। इस बात की व्याख्या करें की यह कथन सही है या गलत है।

    .....

    .....

    .....

4.5 समुदाय

विभिन्न समूहों के समुच्चय को समुदाय कहा जाता है, यद्यपि कुछ खास विशेषताएँ होती हैं जिनके द्वारा किसी समुदाय की पहचान की जाती है। फर्दिनांद टोनीस ने 'समुदाय' (गेमाइनशाफ्ट) और 'समाज' (जेस्लिशाफ्ट) के बीच अंतर का उल्लेख किया है। उनका यह मानना था कि इनमें से पहले वाली एकीकृत इकाई थी, जिसने विभिन्न सामाजिक बदलावों के कारण टूटना शुरू कर दिया। कोई समुदाय एक समान भावनाओं को साझा करने वाले व्यक्तियों के समुच्चय के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें वे सभी यह महसूस करते हैं कि वे एक ही शरीर के अंग हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि वे सभी लोग एक दूसरे से जुड़े होने की भावना साझा करते हैं। यह मानदंड कुछ मामलों पर लागू होता है परन्तु दूसरों पर नहीं, विशेष रूप से उन लोगों पर यह लागू नहीं होता जो किसी अन्य स्थान क्षेत्र में प्रवासित हो जाते हैं, और समय के साथ साथ छोटे समुदायों में बंट जाते हैं। यह विशेष रूप से तब होता है जब किसी मूल समुदाय का आकार बहुत बड़ा हो जाता है और वह स्थानीय क्षेत्र और उसके संसाधनों पर दबाव डालने लगता है। इस कारण उसके कुछ सदस्य उससे अलग हो जाते हैं और किसी दूसरे क्षेत्र में चले जाते हैं और वहां किसी अलग समुदाय की स्थापना करते हैं। किसी अलग स्थान पर रहने के बावजूद उस विशेष समुदाय के लोगों को अप्रादेशिकृत (de–territorialised) किया जा सकता है, परन्तु वे पहले वाले समुदाय से जुडी अपनी साझा भावनाओं को जारी रखेंगे। इस प्रकार किसी समुदाय को परिभाषित करने के लिए साझा भावनाओं से संबंधित विशेषताएं अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।

कुछ सामाजिक संरचनाओं को 'क्षेत्रीय समुदाय' माना जाता है – वे समुदायों की विभिन्न विशेषताओं को साझा करते हैं परन्तु वे 'वास्तविक समुदाय' नहीं होते हैं। हम इसका उदाहरण किसी बोर्डिंग स्कूल, मठ और महिला मठ, जेल आदि से ले सकते हैं। इन समुदायों का गठन जैविक प्रक्रिया द्वारा नहीं होता है जैसा कि 'वास्तविक समुदायों' के मामले में होता है और इस प्रकार उनके सदस्य उन समुदायों को छोड़ सकते हैं, वहां से सेवानिवृत्त हो सकते हैं, मृत्यु को प्राप्त कर सकते हैं अथवा मुक्त हो सकते हैं और उनका स्थान किसी अन्य द्वारा लिया जा सकता है। इस प्रकार के समुदायों के आगे बढ़ने के अपने ढंग होते हैं परन्तु उन्हें गांवों, आदिवासी बस्तियों और शहरी आबादी से भिन्न रूप से देखने की आवश्यकता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें

18. 'समुदाय' (गेमाइनशाफ्ट) और 'समाज' (जेस्लिशाफ्ट) के बीच अंतर का उल्लेख किसने किया है।

    .....

    .....

    .....

19. समुदाय को परिभाषित करें।

    .....

    .....

    .....

20. किसने यह सुझाव दिया कि किसी समुदाय के सदस्य किसी समान क्षेत्र को साझा करते हैं?

.....

.....

.....

21. 'क्षेत्रीय समुदाय' किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

4.6 जनजाति और जाति

समुदाय, गाँवों तक ही सीमित नहीं हैं। समुदाय शहरी समाजों में भी पाए जाते हैं जहां अज्ञात सी दुनिया होती है और जो अपने आप में संशक्त संरचना ('हनीकॉम्ब सिस्टम;) होती है जो व्यक्ति को समाज से जोड़ती है। यहां दो प्रकार के समुदायों – जनजाति और जाति के उदाहरण दिए जा सकते हैं।

किसी जनजाति को एक समुदाय के रूप में जाना जाता है जिसमें बहुत सारे परिवार सम्मिलित होते हैं जो एक साथ रहते हैं अथवा एक साथ रहते थे, एक ही क्षेत्र को साझा करते हैं और जिनकी एक समान भाषा, संस्कृति, धर्म और जीवन शैली होती है। इस प्रकार का समुदाय राजनीतिक रूप से स्वायत्त होता है, जिसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक आदिवासी समुदाय में उनका अपना नेता होता है और किसी विवाद से संबंधित सभी मामलों को आंतरिक रूप से हल किया जाता है। इस अवधारणा के अनुसार कोई जनजातीय समुदाय बाहरी दुनिया से काफी हद तक अलग होता है और उन्हें अन्य समाजों से संबंधित ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है। इस कारण किसी जनजातीय समुदाय को 'सांस्कृतिक रूप से पृथक' समुदाय माना जाता है जिसका अर्थ यह है कि इनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति होती है जिस पर उसके सदस्यों को गर्व होता है और वे किसी भी तरह के बाहरी ताकतों के हमलों या आलोचनाओं के खिलाफ इसे बचाने के लिए तैयार होते हैं। यह धारणा संस्कृति के लचीलेपन के विचार में योगदान करती है जो इसे खत्म करने के प्रयासों का विरोध करती है।

यद्यपि सच्चाई यह है कि जनजातीय समुदायों को शायद ही कभी पृथक किया जाता है। उनके भी अपने पड़ोसियों के साथ संबंध होते हैं यद्यपि इस तरह के संबंधों की गुणवत्ता और तीव्रता एक संदर्भ से दूसरे संदर्भ में भिन्न होती है। कुछ आदिवासी समुदाय ऐसे भी हैं जो कि एक दूसरे के साथ परस्पर निर्भर हैं और वे अपनी उपज को एक दूसरे के साथ आदान प्रदान करते हैं। डेविड मंडेलबाम ने निलगिरि हिल्स के जनजातीय समुदायों से संबंधित अपने अध्ययन में ऐसी एक स्थिति का वर्णन किया है। इस प्रकार के अन्य उदाहरण उत्तर–पूर्वी भारत के जनजातीय लोगों में देखे जा सकते हैं। यहां तक कि जब किसी जनजातीय समुदाय के अन्य समुदायों के साथ संबंध होते हैं और इस प्रक्रिया में वह समुदाय समान संस्कृति का हिस्सा बन जाता है जिसे वे साझा करते हैं और यह बात उनकी अलग संस्कृति को आगे ले जाता है जिसका पहले उल्लेख किया गया है और ऐसा करने में दृढ़ता बरती जाती है क्योंकि इससे किसी समुदाय के सदस्यों को पहचान मिलती है।

दुनिया भर में जनजातियां पाई जाती हैं। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में उन्हें अलग अलग नामों से जाना जाता है: कुछ हिस्सों में उन्हें आदिवासी, भारतीय, अल्पसंख्यक, मूल निवासी अथवा जातीय समूह कहा जाता है। भारत में जनजाति शब्द के साथ–साथ अनुसूचित जनजाति शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। जिन समुदायों को आरक्षण और विकास के अन्य लाभ देने संबधी पहचान की गई है उन्हें अनुसूचित जनजाति कहा जाता है जिनकी संख्या राष्ट्रीय जनजातीय नीति के मसौदे के अनुसार लगभग सात सौ है।

जाति के बारे में दूसरी ओर देखा जाए तो हिंदू, दक्षिण एशिया में सामाजिक संगठनों का एक सिद्धांत है। एम.एन. श्रीनिवास ने जाति को 'हिंदू धर्म के संरचनात्मक सिद्धांत' के रूप में गणना की है। इस प्रणाली को हिंदू धर्म ग्रंथों द्वारा वैधता प्रदान की गई है। ऋग्वेद के दसवें अनुभाग (मंडल) में इस बात का उल्लेख किया गया है कि विभिन्न जातियों की उत्पत्ति भगवान के शरीर के विभिन्न भागों से हुई है। प्रत्येक जाति को अलग अलग कार्य आवंटित किए गए हैं और वे अपने व्यवसाय को नहीं बदल सकते। किसी जाति के सदस्य अपनी जाति में ही विवाह कर सकते हैं और इस सिद्धांत को जातिय विवाह कहा जाता है।

यद्यपि जनजाति और जाति सांतत्यक की ध्रुवीय श्रेणियां बनाती हैं, जनजाति समतावादी होती है और जाति पदानुक्रमित होती है और इसके साथ–साथ ऐसे भी मामले सामने आए हैं जहाँ जनजातियां जातियां बन गई हैं और जातियां जनजातियां बन गई हैं। इसे जनजाति– जाति सांतत्यक के रूप में जाना जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच करें

22. जनजाति को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

23. क्या जनजातीय समुदाय पृथक होते हैं?

.....

.....

.....

24. अनुसूचित जनजाति को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

25. किसने जाति को 'हिंदू धर्म के संरचनात्मक सिद्धांत' का रूप माना है?

.....

.....

.....

26. जातिय विवाह से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

27. जनजाति– जाति सांतत्यक से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

4.7 पद और भूमिका

हमने पहले देखा था कि व्यक्तियों की मण्डली समाज का गठन करती है। ये व्यक्ति आपस में बातचीत करते हैं, अपने माल और सेवाओं का आदान–प्रदान करते हैं और प्रचलित मानदंडों एवं नियमों के अनुसार दूसरों से व्यवहार करते हैं। समाज के विश्लेषण के तरीकों में से एक तरीका है व्यवहार का पारस्परिक पैटर्न। प्रत्येक वार्तालाप में, व्यक्ति सामाजिक स्थिति को ग्रहण करता है और सामाजिक स्थिति की अपेक्षा के अनुसार दूसरे व्यवहार करता है। उदाहरण के लिए यदि मैं एक शिक्षक हूँ तो मेरा काम सिखाना है, शिक्षक होना मेरी सामाजिक स्थिति है और शिक्षण की प्रक्रिया मेरा व्यवहार है। एक शिक्षक के रूप में मेरी स्थिति को आम तौर पर मेरे समाज में व्यवसायों की एक स्वीकार की रैंकिंग में रखा गया है –यह किसी नौकरशाह से कम हो सकता है या किसी कार्यालय क्लर्क से ऊपर हो सकता है, लेकिन मेरे काम के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा कि मैं अपने काम को किस प्रकार करता हूं। 'अपने काम के आधार पर मैं ' 'अपने छात्रों द्वारा', 'एक अच्छा शिक्षक' या 'एक बुरा शिक्षक' के रूप में गिना जा सकता सकता हूँ।

इस बात को समझने के लिए, राल्फ लिंटन ने दो अवधारणाओं, पद और भूमिका को शुरु किया। उनके अनुसार पद नामक अवधारणा तकनीकी रूप से उन सामाजिक स्थितियों हेतु प्रयुक्त होती है जो कोई व्यक्ति किसी पारस्परिक वार्तलाप की स्थिति में पाते हैं। भूमिका व्यवहार को संदर्भित करता है जो कि कोई व्यक्ति किसी पद पर रहते हुए करता है। लिंटन ने कहा हैं कि भूमिका, 'स्थिति का गतिशील पहलू ' है, जिसका अर्थ यह है कि भूमिका अदा की जाति है। पद और भूमिका एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, क्योंकि एक स्थिति और दूसरा व्यवहार को परिभाषित करता है। कोई पद तब तक प्रासंगिक नहीं होता है जब तक कि उसे क्रियान्वित नहीं किया जाता है, और इसी प्रकार व्यवहार उस स्थिति से संबंधित होता है जो व्यक्ति किसी दिए गए संवादात्मक स्थिति में करता है। क्योंकि कोई व्यक्ति अनेक स्थितियों में भाग लेता है, इसलिए उसकी संकल्पना 'कई स्थितियों का संग्रह' के रूप में की जा सकती है, उनमें से प्रत्येक भूमिका उपयुक्त स्थिति में कार्रवाई में आती है। अतः किसी बैंक में एक ग्राहक, ट्रेन में यात्रीय और कक्षा में शिक्षक की भूमिका में होता है। प्रत्येक पद/स्थिति अधिकारों एवं कर्तव्यों का एक बंडल होता है और जो कर्तव्यों को परिभाषित करता है और उनके द्वारा किए गए कर्तव्यों के आधार पर वह उनका दूसरों पर अधिकार भी होता है।

लिंटन ने भी स्थितियों/पदों को दो श्रेणियों में विभाजित किया है – जिनमे से एक को जन्म के आधार पर अर्जित किया जाता है और दूसरे को व्यक्ति प्रतिस्पर्धा एवं अधिग्रहण द्वारा प्राप्त करता है। जन्म द्वारा प्राप्त स्थितियों/पदों को जातिगत स्थिति/पद कहते हैं जैसा कि किसी जाति या कुल में या या किसी विशेष लैंगिक श्रेणी में जन्म। प्रतिस्पर्धा द्वारका प्राप्त पदों/स्थिति को अर्जित स्थिति/पद के रूप में जाना जाता है। किसी पारंपरिक समाज में निर्धारित स्थिति/पद अधिक महत्वपूर्ण होती है बाकि किसी जटिल समाज में अर्जित स्थिति की संख्या अधिक होती है। यद्यपि निर्धारित और अर्त्जी स्थिति/पद विश्लेषणात्मक रूप से अलग-अलग हैं, परन्तु निर्धारित स्थिति/पद किसी अर्जित स्थिति/पद को प्रभावित करती है। अगर मैं किसी समृद्ध परिवार में पैदा हुआ हूं, तो विदेश में पढ़ाई करने की संभावना किसी गरीब परिवार के पैदा होने की स्थिति से मेरे लिए कहीं अधिक है।

अपनी प्रगति की जाँच करें

28. स्थिति/पद और भूमिका की अवधारणा को किसने शुरू किया ?

    .....

    .....

    .....

29. निर्धारित स्थितियां/पद क्या हैं?

    .....

    .....

    .....

30. अर्जित स्थिति से आपका क्या तात्पर्य है?

    .....

    .....

    .....

4.8 सामाजिक वर्गीकरण

सामाजिक वर्गीकरण की अवधारणा समाज के विभाजन को अलग–अलग परतों (स्ट्रेट) में दर्शाती है, जिसे एक दूसरे के ऊपर रखा जाता है। 'वर्गीकरण' की अवधारणा स्तर (और उसके बहुवचन 'स्तरों') की याद दिलाता है जिसका पृथ्वी विज्ञान (भूविज्ञान) में प्रयोग किया जाता है। भूविज्ञान में इसके अर्थ की तुलना करके, समाज में, उन लोगों को ऊपर रखा जाता है जो अधिक विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं और वह भी उनके मुकाबले जो कम विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है की सामाजिक वर्गीकरण सामाजिक असमानता से जुड़ा हुआ है। यद्यपि सामाजिक वर्गीकरण के तहत सभी असमानताओं को सम्मिलित नहीं किया गया है। उदाहरणस्वरुप उम्र और लैंगिकता के अनुसार समाज विभाजित होते हैं, परन्तु ये सामाजिक वर्गीकरण के पहलू नहीं हैं। वास्तव में उम्र और लैंगिकता की असमानताओं हेतु सामाजिक भेदभाव शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। जनजातीय समाजों में आयु और लैंगिक असमानताएं हैं परन्तु उनके सामाजिक वर्गीकरण की असमानता नहीं है।

आधारभूत सिद्धांत

सामाजिक वर्गीकरण के तीन सिद्धांत हैं। पहला वह सिद्धांत है जिसमें लोग (1)जीवन शैली के अनुसार विभाजित होते हैं। कुछ जीवन शैलियों को दूसरों के लिए बेहतर माना जाता है। उदाहरण के लिए, ब्राह्मणों की जीवन शैली को अन्य जातियों की जीवन शैली से श्रेष्ठ माना जाता है। इस सिद्धांत को स्थिति कहा जाता है। जाति किसी स्थिति समूह का उदाहरण है।

दूसरा सिद्धांत (2) वर्ग नामक श्रेणी है। इसका संबंध उत्पादन के पहलुओं से है। इसका संबंध संसाधनों पर नियंत्रण से है। कार्ल मार्क्स के अनुसार मुख्य रूप से दो वर्ग होते हैं – जिनके पास संपत्ति होती है ('स्वामी') और जिनके पास संपत्ति नहीं होती ('स्वामित्वहीन')। उत्तरार्द्ध उस संपत्ति पर कार्य करते हैं जिस पर प्रथम श्रेणी के सदस्यों का स्वामित्व होता है। अपने कार्य के बदले वे मजदूरी प्राप्त करते हैं, वे मजदूर होते हैं। कार्ल मार्क्स का यह मानना था कि साम्यवाद के पहले चरण के बाद मानव इतिहास में प्रत्येक समय जब कोई वर्ग नहीं था तब भी इन दो वर्गों की उपस्थिति उसकी विशेषता थी। वर्गीकरण के इस पहले चरण को 'आदिम साम्यवाद' के रूप में जाना जाता था जिसे कार्ल मार्क्स के सहयोगी फ्रेडरिक एंजल्स ने सुझाया था। स्थिति और वर्ग के बीच यह अंतर है कि यदि पहले को जीवन शैली के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है – उपभोग के तरीके के रूप में तो दूसरे को उत्पादन की प्रणाली में इसके स्थान के संबंध में परिभाषित किया जाता है। दूसरे शब्दों में स्थिति को जीवन 'शैली' के रूप में जाना जाता है, और वर्ग वह है जिसके द्वारा उत्पादन प्रक्रियाओं में भूमिका अदा की जाती है।

तीसरा सिद्धांत (3) राजनीतिक शक्ति का है। प्रत्येक समाज में कुछ लोग होते हैं जो दूसरों पर राज करते हैं और अपनी चाहत के अनुसार दूसरों से काम लेते हैं। कार्ल मार्क्स हेतु संसाधनों पर नियंत्रण के लिए ताकत लगाई गई। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि जो लोग आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखते हैं वे भी राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करते हैं। मैक्स वेबर हेतु कई समाजों में वर्ग और शक्ति अलग अलग हो गई है। जिनका आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण है उनके लिए यह जरूरी नहीं है कि वे राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करें। मार्क्स ने सत्तारूढ़ वर्ग की अवधारणा दी है। वेबर ने यह माना है कि वर्ग को स्थिति बाजार की स्थिति द्वारा निर्धारित किया गया था। वेबर ने यह कहा है कि वर्ग की स्थिति बाजार की स्थिति थी।

वर्गीकरण के ये तीन सिद्धांत ओवरलैप हो सकते हैं, वह भी इस अर्थ में कि जो पद पदानुक्रम में उच्चतम स्थान पर होते हैं वे अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करते हैं और राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की स्थिति 'संचयी असमानता' है, परन्तु जब ये सिद्धांत ओवरलैप नहीं होते हैं तो इस 'प्रसारित असमानता' कहते हैं। आंद्रे बेते ने दक्षिण भारत के एक गांव श्रीपुरम का अध्ययन किया और उसने अपने अध्ययन में इस बात का उल्लेख किया कि वहां पर संचयी असमानता से प्रसारित असमानता जैसे परिवर्तन हुए हैं। प्रारंभ में यहाँ ब्राह्मण जमीन के मालिक थे और उन्होंने भी राजनीतिक शक्ति का प्रयोग किया। वहां गैर– ब्राह्मण आंदोलन ने ऐसी परिस्थिति का नेतृत्व किया जिससे जहां ब्राह्मण के नियंत्रण से जमीन गैर–ब्राह्मण के नियंत्रण में चली गई। इस प्रकार असमानता प्रसारित की गई वह भी इस अर्थ में कि जो जाति (अर्थात स्थिति) पदानुक्रम के शीर्ष पर थी वह वर्ग या शक्ति के पदानुक्रम में शीर्ष पर नहीं थी।

अपनी प्रगति की जांच करें

31. सामाजिक वर्गीकरण क्या है?

.....

.....

.....

32. सामाजिक वर्गीकरण के तीन सिद्धान्त क्या हैं?

.....

.....

.....

33. संसाधनों पर शक्ति के संदर्भ में किसने वर्ग की चर्चा की है ?

.....

.....

.....

4.9 समाज और संस्कृति के बीच संबंध

समाज की कल्पना संस्कृति के बिना नहीं की जा सकती है। एम.जे. हर्सकोविट्स के शब्दों में संस्कृति की सबसे संक्षिप्त परिभाषा, यह है कि यह 'मनुष्य निर्मित पर्यावरण है'। संस्कृति ज्ञान की वह प्रणाली है जो पीढ़ी दर पीढ़ी मनुष्यों के सामूहिक और संचयी प्रयासों द्वारा बनाई गई है। संस्कृति सीखी जाती है और इस प्रकार एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक फैलती है, और प्रत्येक पीढ़ी इसमें थोड़ा बहुत कुछ जोड़ती है और इसे थोड़ा सा आगे ले जाती है। इस तरह सामूहिक और व्यक्तिगत मानव कार्यों से उस समय तक संस्कृति परिवर्तित होती रहती हैय जब तक कि बाह्य तौर पर इसमें परिवर्तन नहीं किए जाते हैं, संस्कृति परिवर्तन की प्रक्रिया अपने आप में एक धीमी प्रक्रिया है। संस्कृति को समाज के सदस्य प्रभावित करते हैं। सीखने की संस्कृति की प्रक्रिया समय के साथ धीमी गति से होती है उसे संस्कृतिकरण के नाम से जाना जाता है।

संस्कृति जानकारी के लिहाज से उच्च होती है लेकिन वह अपने आप पर कार्य नहीं करती है। जो ताकत में उच्च होता है वह व्यक्ति है। जब व्यक्ति संस्कृति को आत्मसात कर लेता है उसके उपरांत वह व्यवहार शुरू कर देता है तो उसके व्यवहार में संस्कृति झलकती है। संस्कृति की समझ और व्यक्ति की ताकत के कारण सामाजिक जीवन अस्तित्व में आता है। मानव जीवन को समझने के लिए व्यक्ति (इकाई), व्यक्तियों का समूह (समाज) और संस्कृति के बीच संबंध मूल आधार है। अगली इकाई में संस्कृति की अवधारणा पर विस्तृत ढंग से चर्चा की गई है।

4.10 सारांश

आपने इस इकाई में मानव विज्ञान के मूलभूत अवधारणाओं को सीखा है। मानवविज्ञानी समाज और संस्कृति के विभिन्न रूपों का अध्ययन करते हैं, उनकी तुलना करते हैं तथा उनके बीच

की समानता तक पहुंचने का प्रयास करते हैं। इन अवधारणाओं में से प्रत्येक अवधारणा को अन्य अवधारणाओं में विभाजित किया जा सकता है। विश्लेषण के ये सभी तरीके हैं जो कि समाज और संस्कृति को समझने में हम लोगों की सहायता करते हैं। यहां पर हमने समाज के अर्थ और उससे संबंधित मूल अवधारणाओं पर चर्चा की है, अगली इकाई में हम संस्कृति की अवधारणा को विस्तारपूर्वक समझने की कोशिश करेंगे कि मानवविज्ञानी संस्कृति को किस प्रकार परिभाषित करते हैं और उसे देखते हैं तथा संस्कृति से संबंधित विभिन्न तत्व कौन से हैं।

4.11 संदर्भ

किंग्सले, डेविस. (1949). *ह्यूमन सोसाइटी* .न्यूयॉर्क : मैकमिलन.

बेते, आंद्रे (2012) *सोशियोलॉजी.* दिल्ली: ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

हरलांबोस, एम. होल्बर्न, एम एंड हेल्ड, आर. (1980). *सोशियोलॉजी : थीम्स एंड पर्सपेक्टिव्स.* नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस.

4.12 आपकी प्रगति की जांच करने हेतु प्रश्नों के उत्तर

1. ब्रोंस्लालो मालिनोव्स्की
2. रॉबर्ट लोवी
3. ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन
4. फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाईल दुर्खीम
5. सन 1905 में लिवरपूल में सामाजिक मानव विज्ञान के चेयर की स्थापना की गई।
6. सर जेम्स फ्रेजर
7. 'समाज' शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द सोसियस से हुई है, जिसका अर्थ है 'साझा करना'।
8. अरस्तु
9. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.2 को पढ़ें।
10. इस इकाई के अनुभाग 4.3 को पढ़ें
11. जॉर्ज होम्स
12. सीएस कूले
13. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.3 को पढ़ें।
14. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.3 को पढ़ें।
15. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.4 को पढ़ें।

16. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.4 को पढ़ें।
17. सत्य है।
18. फर्दिनांद टोनीस
19. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.5 को पढ़ें।
20. मैकाइवर व पेज
21. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.5 को पढ़ें।
22. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.6 को पढ़ें
23. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.6 को पढ़ें
24. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.6 को पढ़ें
25. एम.एन.श्रीनिवास
26. किसी जाति के सदस्य अपनी जाति में ही विवाह कर सकते है, इस सिद्धांत को जातीय विवाह कहा जाता है।
27. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.6 को पढ़ें
28. राल्फ लिंटन
29. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.7 को पढ़ें
30. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.8 को पढ़ें
31. उत्तर हेतु इस इकाई के भाग 4.8 को पढ़ें
32. सामाजिक वर्गीकरण के तीन सिद्धांत है – स्थिति, वर्ग और राजनीतिक शक्ति
33. कार्ल मार्क्स

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY